प्रेस विज्ञप्ति

मनुष्य है हर धर्म से ऊपर – गोविन्दानंद जी महाराज

हिन्दुस्तान कॉलेज में आयोजित 'ह्यूमन वैल्यूज एण्ड प्रोफेशनल एथिक्स' स्तर–2 कार्यशाला का समापन समारोह

शारदा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के प्रतिष्ठित संस्थान हिन्दुस्तान कॉलेज ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी में ''ह्यूमन वैल्यूज एण्ड प्रोफेशनल एथिक्स'' स्तर–2 पर आयोजित 8 दिवसीय कार्यशाला का आज दिनांक 28 दिसम्बर, 2018 के दिन विधिवत समापन सम्पन्न हुआ। जिसके मुख्य अतिथि वृन्दावन से पधारे श्री गोविन्दानंद जी महाराज, एकेटीयू द्वारा नियुक्त ह्यूमन वैल्यूज सैल के समन्वयक श्री भानू प्रताप सिंह, प्रेक्षिका डॉ. दिव्या बरतरिया एवं डॉ. प्रियंका गौतम समारोह में उपस्थित रहे।

संस्थान के निदेशक डॉ. राजीव कुमार उपाध्याय ने मुख्य अतिथि का स्वागत एवं आभार प्रकट किया तथा अपने संक्षिप्त स्वागत सम्बोधन में इस आठ दिवसीय कार्यशाला की महत्ता पर प्रकाश डालते हुये सभी प्रतिभागी शिक्षकों से इससे आत्मसात कर जीवन में उतारने एवं समाज में इसके पहलुओं को फैलाने की आशा व्यक्त की।

मानविकी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. युधिष्ठर सिंह ने आठ दिवसीय कार्यशाला का संक्षिप्त वर्णन करते हुये एकेटीयू द्वारा नियुक्त ह्यूमन वैल्यूज सैल के समन्वयक श्री भानू प्रताप सिंह, प्रेक्षिका डॉ. दिव्या बरतरिया एवं डॉ. प्रियंका गौतम एवं श्री विकास जी का धन्यवाद दिया और बताया कि हर मानव निरंतर सुख पूर्वक जीना चाहता है। इसके लिए वह यह सोचता है कि सबसे पहले बाहर ठीक हो जाये, फिर परस्परता में सब ठीक हो जाये, तो में भी ठीक होकर सुख पूर्वक जी सकता हूँ। लेकिन वास्तविक जीवन में इस क्रम से निरंतर सुख पूर्वक जीने की सम्भावना नहीं दिखती है। अतः सर्वप्रथम तो मुझे समाधानित होकर स्वयं ठीक होना है, फिर परस्परता में ठीक होना है तत् पश्चात् बाहर ठीक होने की राह दिखाई देती है। अतः हम सभी को इन आठ दिनों में मानव की चाहना, जो निरंतर सुख है, यह समझ में आया। इस निरंतर सुख का अर्थ है, मानव समाधानित हो जाये। इस समाधान के धरातल पर चलने के लिए मानव को

सबसे पहले ज्ञान की आवश्यकता है। इसी ज्ञान के आधार पर विवेक अर्थात मानव को अपना लक्ष्य स्पष्ट होता है।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि के रुप में आये श्री गोविन्दानंद जी महाराज ने अपने संबोधन में बताया मनुष्य हर धर्म से ऊपर है उन्होंने बताया कि अगर मनुष्य का मूल्यांकन उसके धर्म व जाति के आधार पर होगा तो वह सही नहीं होगा। उन्होंने मनुष्य की पहचान को परिभाषित किया और उदाहरण देकर सुख और दुख में अंतर समझाया। उन्होंने ज्ञान की सीमा न होने की बात भी उदाहरण से समझायी। उन्होंने मनुष्य को हर वक्त ज्ञान ग्रहण करने वाला बताया। उन्होंने बताया कि कोई भी मनुष्य अज्ञानी नहीं है उसके पास सिर्फ ज्ञान का अभाव है। ज्ञान के अभाव से तात्पर्य है ज्ञान में कुछ कमी। उन्होंने संसार के बनने के पीछे परमात्मा की खोज बताया। शरीर के बिना आत्मा की बात नहीं की जा सकती उसी प्रकार परमात्मा के बिना संसार की बात भी नहीं की जा सकती। उन्होंने बताया कि अंग्रेज को समझने के लिए अंग्रजी सीखो लेकिन हिन्दी की अपेक्षा न करो। उन्होंने बताया कि शिक्षा तथा संस्कारा का काम बचपन से ही शुरु हो जाता है जब बच्चा मॉ से किसी वस्तु की जिद्द करता है तब मॉ उसको अनेक तरीके से समझाती है। यही वह क्षण होते हैं जब वह परिवार के दिये हुए मूल्यों को समझता है तथा अपने अंदर संस्कार के रुप में उतारता है। उन्होने कहा कि भारत में मूल्य शिक्षा परंपरा में ही रही है। यहॉ परिवार व्यवस्था शुरु से ही मजबूत रही है जिससे बच्चों के अंदर संबधपूर्वक जीने की योग्यता विकसित हो जाती है। उन्होंने मनुष्य को एक सम्भावना बताया और कहा कि अगर आप उसे कुरेदोगे तो उसमें से राम या कृष्ण निकल सकते हैं।

कार्यक्रम के दौरान कुछ विशेष प्रतिभागियों से कार्यक्रम के बारे में प्रतिक्रियाओं का भी एक सत्र रखा गया जिसमें सभी प्रतिभागियों में इस कार्यशाला को अत्यंत आवश्यक एवं एकेटीयू द्वारा एक उचित कदम बताया गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन मानविकी विभाग की आचार्या डॉ. अर्चना गौतम एवं डॉ. राजकुमारी ने किया। कार्यशाला के अंत में धन्यवाद ज्ञापन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. केशव देव ने दिया।

इस अवसर पर कॉलेज के ट्रेनिंग एण्ड प्लेसमेंट विभाग के निदेशत श्री सुदीप्तो चौधरी, डीन आर एण्ड डी प्रो. एम. एस. गौर, डीन स्टूडेंट वैलफेयर डॉ. संदीप अग्रवाल, डा0 ममता शर्मा, डॉ. राजीव कुमार तिवारी, डॉ. सुरुचि, श्री अनुराग वाजपेयी, श्री शंकर ठाकर, सहित समस्त शिक्षकगण एवं प्रतिभागी मौजूद रहे।